International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 04(II), October - December, 2025, pp. 102-104

रीवा जिले में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि में आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी की भूमिका का अध्ययन

शिफाली सिंह[1*] | डॉ. मनीष कुमार शुक्ला[2]

[1]शोधार्थी वाणिज्य, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.).
[2]प्राध्यापक वाणिज्य विभाग, शासकीय ठाकुर रणमत सिंह, महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.).

[*]Corresponding Author: shifalisingh12345@gmail.com

Citation: शिफाली सिंह एवं मनीष कुमार शुक्ला. (2025). रीवा जिले में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि में आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी की भूमिका का अध्ययन. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(04(II)), 102–104.

सार

भारतीय जीवन बीमा उद्योग देश की वित्तीय प्रणाली का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो न केवल जोखिम सुरक्षा प्रदान करता है बल्कि दीर्घकालीन बचत एवं पूंजी निर्माण में भी सहायक होता है। वर्ष 2000 के पश्चात् बीमा क्षेत्र में हुए उदारीकरण ने निजी जीवन बीमा कंपनियों को प्रवेश का अवसर प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप बीमा सेवाओं की गुणवत्ता, उत्पाद विविधता तथा प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है। इस परिवेश में आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कंपनी ने निजी जीवन बीमा क्षेत्र में एक सशक्त पहचान स्थापित की है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य रीवा जिले में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि में आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी की भूमिका का वाणिज्यिक दृष्टिकोण से विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार कंपनी की विपणन रणनीतियाँ, उत्पाद संरचना, अभिकर्ता नेटवर्क, ग्राहक सेवा एवं तकनीकी नवाचारों ने बीमा व्यवसाय के विस्तार को प्रभावित किया है।

शब्दकोश: *निजी जीवन बीमा, आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल, बीमा व्यवसाय, रीवा जिला, प्रीमियम संग्रह, वाणिज्यिक विकास।*

प्रस्तावना

जीवन बीमा आधुनिक अर्थव्यवस्था का एक ऐसा वित्तीय साधन है, जो व्यक्ति को आकस्मिक जोखिमों से सुरक्षा प्रदान करने के साथ–साथ भविष्य की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में भी सहायक होता है। जीवन बीमा का महत्व विशेष रूप से उन विकासशील देशों में अधिक है, जहाँ सामाजिक सुरक्षा की औपचारिक व्यवस्थाएँ सीमित होती हैं। भारत में जीवन बीमा ने दीर्घकालीन बचत, निवेश एवं सामाजिक सुरक्षा के एक प्रभावी माध्यम के रूप में अपनी भूमिका स्थापित की है।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय जीवन बीमा क्षेत्र पर सार्वजनिक क्षेत्र का एकाधिकार रहा, किंतु आर्थिक उदारीकरण की नीति के अंतर्गत वर्ष 2000 में बीमा क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोला गया। इस निर्णय ने बीमा उद्योग की संरचना में गुणात्मक परिवर्तन उत्पन्न किया। निजी कंपनियों के आगमन से न केवल प्रतिस्पर्धा बढ़ी, बल्कि ग्राहक–केन्द्रित सेवाएँ, नवीन उत्पाद एवं आधुनिक विपणन तकनीकों का भी विकास हुआ है।

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कम्पनी निजी जीवन बीमा क्षेत्र की अग्रणी कंपनियों में से एक है। कंपनी ने भारतीय उपभोक्ताओं की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बीमा उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला विकसित की है, जिसमें सुरक्षा, बचत, निवेश एवं सेवानिवृत्ति योजनाएँ सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त कंपनी की डिजिटल सेवाएँ, त्वरित दावा निपटान एवं प्रशिक्षित अभिकर्ता नेटवर्क इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। मध्यप्रदेश का रीवा जिला सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से एक विकासशील क्षेत्र है, जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि, असंगठित क्षेत्र एवं लघु व्यापार से जुड़ा हुआ है। परंपरागत रूप से यहाँ बीमा के प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत कम रही है, किंतु विगत वर्षों में निजी जीवन बीमा कंपनियों के प्रयासों से इस स्थिति में परिवर्तन आया है। आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी ने रीवा जिले में शाखाओं की स्थापना, अभिकर्ताओं की नियुक्ति एवं स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप योजनाओं के माध्यम से बीमा व्यवसाय को विस्तार प्रदान किया है।

वाणिज्यिक अध्ययन के दृष्टिकोण से किसी निजी बीमा कम्पनी की भूमिका का मूल्यांकन केवल उसके प्रीमियम संग्रह तक सीमित नहीं किया जा सकता, इसके अंतर्गत कंपनी की विपणन रणनीतियाँ, ग्राहक संतुष्टि, व्यवसायिक वृद्धि एवं क्षेत्रीय आर्थिक विकास में योगदान का भी विश्लेषण आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी परिप्रेक्ष्य में रीवा जिले में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि में आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन की सार्थकता उसके उद्देश्यों पर आधारित होती है, क्योंकि उद्देश्य ही शोध की दिशा, सीमा एवं प्रकृति को निर्धारित करते हैं। स्पष्ट एवं सुव्यवस्थित उद्देश्य शोधकर्ता को तथ्यों के वैज्ञानिक विश्लेषण में सहायता प्रदान करते हैं तथा अध्ययन को निष्कर्षोन्मुख बनाते हैं। प्रस्तुत शोध में रीवा जिले के संदर्भ में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि तथा उसमें आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कम्पनी की भूमिका का वाणिज्यिक दृष्टिकोण से मूल्यांकन किया गया है। इस अध्ययन के उद्देश्य बीमा व्यवसाय के विकास, रणनीतियों एवं प्रभावों को समझने पर केन्द्रित हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों निम्नलिखित प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है –

- रीवा जिले में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की स्थिति एवं प्रवृत्तियों का अध्ययन करना।
- आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी की व्यवसायिक एवं विपणन रणनीतियों का विश्लेषण करना।
- निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि में कंपनी की भूमिका का वाणिज्यिक मूल्यांकन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि को अपनाया गया है। शोध को तथ्यात्मक एवं प्रामाणिक बनाने हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के समंकों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक समंकों का संकलन रीवा जिले के 300 चयनित पॉलिसीधारकों से संरचित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है। इन समंकों के माध्यम से बीमा योजनाओं की लोकप्रियता, ग्राहक संतुष्टि एवं बीमा जागरूकता के स्तर का मूल्यांकन किया गया है। द्वितीयक आँकड़े IRDAI की वार्षिक रिपोर्ट, आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी के वार्षिक प्रतिवेदन, शोध पत्रिकाओं, पुस्तकों एवं सरकारी प्रकाशनों से संकलित किए गए हैं। प्राप्त आँकड़ों का प्रतिशत एवं तुलनात्मक विश्लेषण कर निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

विश्लेषण

रीवा जिले में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि आई. सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी ने निरंतर प्रगति की है। कंपनी द्वारा अपनाई गई ग्राहक–केन्द्रित नीतियाँ, विविध बीमा योजनाएँ एवं प्रभावी अभिकर्ता नेटवर्क ने बीमा व्यवसाय के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्राथमिक सर्वेक्षण से यह ज्ञात हुआ कि बीते पाँच वर्षों में पॉलिसीधारकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हुई है। यह

वृद्धि न केवल बीमा के प्रति बढ़ती जागरूकता को दर्शाती है, बल्कि कंपनी की विश्वसनीयता एवं सेवा गुणवत्ता को भी प्रतिबिंबित करती है। इस प्रकार रीवा जिले में आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल के पॉलिसीधारकों का विश्लेषणात्मक अध्ययन सारणी क्रमांक 01 प्रस्तुत किया गया है, जो इस प्रकार है–

सारणी 1: रीवा जिले में आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी के पॉलिसीधारकों की संख्या में वृद्धि से संबंधित विवरण (वर्ष 2020–21 से 2024–25)

क्रमांक	वर्ष	पॉलिसीधारकों की संख्या	प्रतिशत
1.	2020–21	45	15.00:
2.	2021–22	52	17.33:
3.	2022–23	61	20.33:
4.	2023–24	68	22.67:
5.	2024–25	74	24.67:
योग		300	100.00:

स्रोत– शोधार्थी द्वारा प्राथमिक सर्वेक्षण पर आधारित आँकड़े।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 2020–21 की तुलना में 2024–25 में पॉलिसीधारकों की संख्या एवं प्रतिशत में वृद्धि हुई है। यह प्रवृत्ति निजी जीवन बीमा व्यवसाय के प्रति बढ़ते विश्वास एवं कंपनी की प्रभावी रणनीतियों को दर्शाती है।

शोध की समस्या एवं सुझाव

रीवा जिले में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि के बावजूद कुछ समस्याएँ विद्यमान हैं। इनमें बीमा साक्षरता का अभाव, ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पहुँच, प्रीमियम दरों को लेकर भ्रांतियाँ एवं बीमा शर्तों की जटिलता प्रमुख हैं। कई संभावित ग्राहक बीमा को अनावश्यक व्यय मानते हैं, जिससे व्यवसाय विस्तार में बाधा उत्पन्न होती है।

इन समस्याओं के समाधान हेतु यह आवश्यक है कि आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल कम्पनी ग्रामीण एवं अर्द्ध–शहरी क्षेत्रों में बीमा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करे। सरल एवं पारदर्शी योजनाओं का प्रचार, डिजिटल माध्यमों का विस्तार तथा अभिकर्ताओं का नियमित प्रशिक्षण बीमा व्यवसाय को अधिक सुदृढ़ बना सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह रीवा जिले में निजी जीवन बीमा व्यवसाय की वृद्धि में आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस कम्पनी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। कंपनी ने अपने संगठित प्रबंधन, नवीन उत्पादों एवं प्रभावी विपणन रणनीतियों के माध्यम से बीमा व्यवसाय को निरंतर विस्तार प्रदान किया है। वाणिज्यिक दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी ने बीमा उद्योग को अधिक प्रतिस्पर्धी एवं ग्राहक–केन्द्रित बनाया है। यदि भविष्य में कंपनी सामाजिक उत्तरदायित्व एवं वित्तीय समावेशन पर और अधिक ध्यान दे, तो रीवा जिले में जीवन बीमा व्यवसाय की संभावनाएँ और अधिक प्रबल हो सकती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI), वार्षिक प्रतिवेदन, नई दिल्ली, 2019–20।
2. बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI), वार्षिक प्रतिवेदन, नई दिल्ली, 2020–21।
3. बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI), वार्षिक प्रतिवेदन, नई दिल्ली, 2021–22।
4. आई.सी.आई.सी.आई. प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस, वार्षिक प्रतिवेदन, मुंबई, 2022–23।
5. शर्मा, आर.के., बीमा एवं जोखिम प्रबंधन, कल्याणी पब्लिशर्स, 2020।
6. मिश्रा, एस., भारत में जीवन बीमा, हिमालय पब्लिशिंग हाउस, 2021।

❑❑❑